Navchetana Homilies

May 19, 2019

Is 49:7-13

Act 9:1-9

Heb 10:19-25

Jn 21:1-14

पुनःरूत्थान काल का पाँचवाँ रविवार

आज के पवित्र सुसमाचार का मुख्य विषय तीबेरियूस समुद्र किनारे हुई शिष्यों द्वारा मछली पकड़ने की अद्‌भुत घटना और पराजित हुए हताश शिष्यों को पुनरूत्थित मसीह का दिव्य दर्शन और येसु द्वारा रोटी और मछली को विभक्त करके शिष्यों को प्रदान किरने की घटनायें हैं।

तीन साल पहले जब प्रभु ने अपने प्रिय शिष्यों को बुलाया, दूसरे शब्दों में जब येसु अनके जीवन में आये, तब उन्होंने अपना सब कुछ छोड़कर, यहाँ तक की अपनी नाँव, जाल और माता–पिता को छोड़कर उनका अनुगम किया था। इस दुनिया के सभी वस्तुओं, रिश्तों और पद सम्मान से भी परे प्रभु ईसा को अपनाते हुए वे उनके पीछे हो लिये। उनके जीवन में प्रभु को प्राप्त करने का अतीव उत्साह, उमंग और शांति भर गया। उन्होंने प्रभु के अद्‌भुत कार्य देखे, उनकी शिक्षा सुनी, उन्हें व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया। लेकिन

तीन वर्ष के अंत में उनका दुख भोग, पीड़ा सहन और मरण उन्हें विचलीत कर देता है। उनकी मनोकामनाओं को, सपनों को क्षण भर में भंग कर देता है। उनके मन में निराशा और भय छाने लगता है। वे अपने पुराने जीवन शैली में जाने का निश्चय करते हैं। मन का प्रकाश नष्ट हो जाता है और वे एक ही दिन में नाँव और जाल का सहारा ले लेते हैं। लेकिन उस पराजय के समुद्र तट पर प्रभु उन्हें दर्शन देते हैं।

तिबेरियस समुद्र संघर्षभरी दुनिया का प्रतिक है। जिसके तट पर मनुष्य पराजित, अपमानित और हताश हो जाता है। अक्सर जीवन में पराजय, निराशा और नष्ट बोध की भावनायें भर जाती है। जीवन में आशा अस्त होते हुए नज़र आती है। तब हमें अपने आप में यह विश्वास जगाना होगा कि सभी पराजयों के पीछे उत्थित येसु का सानिध्य है। वे हमें छोड़ने के लिए तैय्यार नहीं हैं।

यहाँ हमारे मनन चिंतन का दूसरा विषय है कि मनुष्य अपने अपार सामर्थ्य और ताकत पर गर्व करता हैं। वह सोचता है कि मैं अपने ज्ञान से, बुद्धि से और शक्ति से सबकुछ हासिल कर सकता हूँ। पेत्रुस एक अच्छा मछुआरा होने के साथ–साथ मछली पकड़ने की कला को अच्छी तरह जानता था। वह जानता था कि किस दिशा में जाल फेंकना है और किस समय, किस प्रकार यह कार्य करना है। लेकिन इसके बावजूद भी उसे रात भर मेहनत करने के बाद भी कुछ नहीं

मिला। आज आधुनिक कलीसिया में और प्रेरिताई कार्यों में देखी जाने वाली सबसे बड़ी कमजोरी भी यही है। हमारे कार्यों में प्रभु येसु ख्रिस्त नहीं है, उनका पवित्र सानिध्य नहीं है। जब मनुष्य अपनी ताकत पर निर्भर रहते हुए ईश्वर के बिना परिश्रम करते हैं तब कठीन मेहनत के बाद भी वे असफल हो जाते हैं।

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रभु येसु जीवन में पराजित हुए अपने प्रिय शिष्यों को रोटी और मछली विभक्त करते हुए उन्हें परिपोषित करते हैं। विभक्त किये जाने वाली रोटी में प्रभु येसु ने अपना स्थायी सानिध्य उन्हें प्रदान किया। वह स्वयं उनके लिये आत्मीय भोजन बन गये। पवित्र बलिदान में प्रभु येसु हर रोज़ परम प्रसाद बनकर हमारे जीवन में आते हैं। वह चिरकाल तक अपनी उपस्थिति देकर हमारे साथ रहते हैं। हमारे कष्टों में, सकटों में और पराजय में वह हमारे जीवन में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते हैं। यदि हमारा विश्वास सुदृढ़ है तो हम प्रभु येसु को अपने जीवन के हर पहलुओं में अनुभव कर सकते हैं।

Fr. Sebastian Mavungal CMI